International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 54-55

वर्तमान बी.एड. महाविद्यालयों में स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम

डॉ. सलीम अहमद
सहायक प्रोफेसर, मौलाना आजाद मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश
इस शोध–पत्र में वर्तमान बी.एड. महाविद्यालयों में स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम पर विस्तृत चर्चा की गई है। बी.एड. पाठ्यक्रम जो कि पूर्व में एक वर्षीय था उसको वर्ष 2015 से द्विवर्षीय कर दिया गया है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा पारित राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (विनियम मानदण्ड तथा क्रियाविधि) विनियम 2014 के अनुसार बी.एड. पाठ्यक्रम में स्कूल स्थानबद्ध कार्यक्रम को एक अनिवार्य अंग बना दिया गया है। स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम 20 सप्ताह का निर्धारित किया गया है। स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम को दो भागों में बांटा गया है। बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में 4 सप्ताह एवं द्वितीय वर्ष में 16 सप्ताह के लिए स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण निर्धारित किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को विद्यालय गतिविधियों में व्यस्त रखकर एक प्रभावशाली शिक्षक तैयार करना है। स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण द्वारा छात्रों को विद्यालय में एक पूर्णकालिक शिक्षक के उत्तरदायित्वों को निभाने का अवसर प्रदान होता है। इस शोध–पत्र में वर्तमान बी.एड. महाविद्यालयों में स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य, विद्यालय आवंटन, बी.एड. महाविद्यालय, राज्य सरकार, एवं सम्बद्धता विश्वविद्यालय की भूमिका तथा छात्रों को आने वाली समस्याओं पर विस्तृत चर्चा की गई है।

मूल शब्द: प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्कूल स्थानबद्ध

प्रस्तावना
शिक्षण कार्य एक महान एवं पवित्र कार्य है। उत्तम शिक्षण के लिए एक कुशल एवं प्रभावी अध्यापक होना अति आवश्यक है। अध्यापक शिक्षा के लिए स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण घटक है। जो प्रभावशाली अध्यापक बनने के लिए अनिवार्य है। एक ऐसे शिक्षक को तैयार करना जो राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके। स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण में छात्रों को केवल प्रशिक्षण ही नहीं दिया जाता अपितु एक नियमित अध्यापक द्वारा किये जाने वाले समस्त कार्यों को पूरा करने का अवसर भी प्रदान होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में इण्टर्नशिप मॉडल को अपनाने पर जोर दिया गया था। स्कूल इण्टर्नशीप में छात्रों को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को करने की आवश्यकता होती है। कक्षा शिक्षण, कक्षा प्रबंधन विद्यालय अवलोकन कार्य एवं समुदाय आधारित गतिविधियों, सामुदायिक सेवा अभियान, विभिन्न विद्यालयी परिदृश्य का अवलोकन आदि कार्यों में छात्रों को सम्मिलित करना होता है।

स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण के उद्देश्य
1. विद्यालय के वातावरण को समझना।
2. शिक्षण अधिगम संसाधनों का विकास करना ।
3. इकाई–योजना का निर्माण करना।
4. दैनिक पाठ–योजना का निर्माझा करना।
5. मूल्यांकन उपकरणों का विकास एवं प्रबंधन करना ।
6. अध्यापक–अभिभावक बैठक का आयोजन करना ।
7. पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन करना।
8. सामुदायिक सेवा अभियान का आयोजन करना।
9. भिन्न विद्यालय परिदृश्य का अवलोकन करना।
10. कक्षा–कक्ष अवलोकन करना।
11. विद्यालय प्रार्थना सभा को संबोधित करना ।
12. चिंतनशील डायरी बनाना ।
13. विद्यालय पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना ।
14. व्यक्ति अध्ययन करना ।
15. नैदानिक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण करना।

छात्रों को विद्यालय आवंटन प्रक्रिया
स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल एवं नियोजित क्रियान्वयन के लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (विनियम मानदण्ड तथा क्रियाविधि) विनियम 2014 की अनुपालना में राज्य सरकार एवं सम्बद्धता विश्वविद्यालय के तालमेल द्वारा छात्रों को विद्यालय आवंटित किया जाता है। वर्तमान में राजस्थान राज्य के राजकीय एवं निजी शिक्षक प्रशिक्षण संसथाओं में अध्ययनरत छात्रों के लिए प्रथम वर्ष में 4 सप्ताह एवं द्वितीय वर्ष में 16 सप्ताह का इण्टर्नशिप कार्यक्रम अनिवार्य रूप से राजकीय विद्यालयों में ही किया जाना निश्चित किया गया है। बी.एड. छात्रों को विद्यालय आवंटन के लिए राज्य सरकार द्वारा सम्बन्धित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा को नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाता है।

राज्य सरकार द्वारा बी.एड. छात्रों को विद्यालय आवंटन के लिए आनॅलाइन पोर्टल तैयार किया गया है। जिसके अन्तर्गत सर्वप्रथम बी.एड. महाविद्यालयों द्वारा अध्ययरत छात्रों से इण्टर्नशिप के लिए विद्यालयों के चयन के लिए विकल्प लिये जाते है। विकल्प लेते समय छात्रों के गृह जिले को प्राथमिकता दी जाती है। तत्पश्चात महाविद्यालयों द्वारा ऑनलाईन पोर्टल पर विकल्प भरे जाते है। उसके बाद राज्य सरकार द्वारा छात्रों द्वारा दिये गये विकल्पों में से विद्यालय का आवंटन किया जाता है। विद्यालय आवंटन के पश्चात छात्रों को सम्बन्धित विद्यालय में 10 दिवस के भीतर कार्य ग्रहण करना होता है।

महाविद्यालय की भूमिका
स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम में बी.एड. महाविद्यालय एक

महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा जारी गाईडलाईन के अनुसार राज्य सरकार द्वारा इण्टर्नशिप की योजना के सफल क्रियान्वयन हेतु एवं सम्बद्धता विश्वविद्यालय द्वारा जारी परीक्षा नीति के लिए बी.एड. महाविद्यालय एक सेतु का कार्य करता है। इण्टर्नशिप कार्यक्रम की समाप्ति पर छात्रों द्वारा रिपोर्ट तैयार की जाती है। जिसका बी.एड. महाविद्यालय के शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन किया जाता है।

सम्बद्धता विश्वविद्यालय की भूमिका

स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के मूल्यांकन हेतु सम्बद्धता विश्वविद्यालय द्वारा बी.एड. पाठ्यक्रम में उचित परीक्ष योजना तैयार की जाती है। इण्टर्नशीप मूल्यांकन के लिए अंक/ग्रेड की व्यवस्था की जाती है।

छात्रों को इण्टर्नशिप में आने वाली कठिनाईयां

स्कूल इण्टर्नशिप का मुख्य उद्देश्य छात्रों को विद्यालय वातावरण से अवगत कराना एवं ऐसे शिक्षक का निर्माण करना जो समाज एवं देश के विकास में भागीदार बन सकें। लेकिन वर्तमान इण्टर्नशिप में छात्रों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। छात्रों को विद्यालय आवंटन के पश्चात सम्बन्धित विद्यालय में कार्यभार ग्रहण करना होता है। अधिकांश राजकीय विद्यालयों में छात्रों से केवल खाली कालांश ही में शिक्षण कार्य कराया जा रहा है। इण्टर्नशिप के उद्देश्यों की अवहेलना की जा रही है। राजकीय विद्यालय के हैडमास्टर एवं अध्यापकों को सही जानकारी के अभाव में छात्रों से निर्धारित कार्यों को नहीं करवाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त एक ही विद्यालय में अनेक विश्वविद्यालयों से सम्बद्धता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र इण्टर्नशिप कार्य करते है। लेकिन प्रत्येक सम्बद्धता विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में इण्टर्नशिप के मूल्यांकन हेतु अलग–अलग अंक/ग्रेड निर्धारित होते है। जिससे छात्रों को इण्टर्नशिप समाप्ति पर एवं मूल्यांकन प्रपत्र अलग–अलग प्राप्त होता है। अधिकांश राजकीय विद्यालयों में छात्रों द्वारा नियमित कार्य नहीं किया जाता है। निरीक्षण के दौरान छात्र विद्यालयों से नदारद रहते है। राजकीय विद्यालयों में इण्टर्नशिप के लिए सुपरविजन का अभाव होता है। एक ही विद्यालय में बी.एड. प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के छात्र इण्टर्नशिप कार्य करते है लेकिन इण्टर्नशिप समाप्ति पर छात्रों को अलग–अलग प्रकार से उपस्थिति प्रमाण–पत्र जारी कियो जाते है। बी.एड. प्रथम वर्ष में 4 सप्ताह एवं द्वितीय वर्ष में 16 सप्ताह की इण्टर्नशिप का प्रावधान है। लेकिन इण्टर्नशिप कार्यदिवसों की गणना अलग–अलग प्रकार से की जाती है। जिससे छात्रों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। छात्रों की इण्टर्नशिप का मूल्यांकन भी अलग–अलग नियमों से किया जाता है। नियमों की अनभिज्ञता एवं जानकारी के बिना राजकीय विद्यालयों के संस्था प्रधान द्वारा अनेक प्रकार से मूल्यांकन किया जाता है। किस विश्वविद्यालय में कौनसा नियम है। इसकी जानकारी के अभाव में छात्रों को अलग–अलग प्रमाण–पत्र जारी किये जाते है। इण्टर्नशिप का जो वास्तविक स्वरूप है। उसकी पूर्ण रूप से अवहेलना की जा रही है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा पारित राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (विनियम मानदण्ड तथा क्रियाविधि) विनियम 2014 के अनुसार बी.एड. पाठ्यक्रम में स्कूल स्थानबद्ध कार्यक्रम को अनिवार्य किया गया था जिसका मुख्य उद्देश्य एक ऐसे शिक्षक का प्रभावशाली शिक्षक का निर्माण करना जो विद्यालय वातावरण में रहकर एक नियमित शिक्षक की भांति कार्य करें। लेकिन वर्तमान में छात्रों द्वारा की जा रही इण्टर्नशिप सिर्फ एक खाना पूर्ति रह गयी है। इण्टर्नशिप के मूल उद्देश्यों को भुला दिया गया है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि छात्रों द्वारा की जा रही इण्टर्नशिप का पर्यवेक्षण सही तरीके से नही हो पा रहा है।

इण्टर्नशिप की जो अवधि निर्धारित की गई है। उसको बी.एड. पाठ्यक्रम के दौरान पूरी करनी होती है। जिससे छात्र पूरे वर्ष इण्टर्नशिप में व्यस्त रहता है। छात्रों को बी.एड. पाठ्यक्रम को पूरा करने का समय नहीं मिल पाता है। इण्टर्नशिप कार्यक्रम में बी.एड. महाविद्यालयों के शिक्षकों की कोई भूमिका नहीं होती है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालयों में अलग–अलग मूल्यांकन विधि होने के कारण छात्रों को राजकीय विद्यालयों में इण्टर्नशिप के दौरान अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। राज्य सरकार द्वारा छात्रों को विद्यालय आवंटन किया जाता है जिसमें छात्रों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अधिकांशतया छात्रों को घर से दूर विद्यालय आवंटित हो जाते है। जिससे विशेषकर छात्राओं का काफी कठिनाई झेलनी पड़ती है।

सुझाव

1. इण्टर्नशिप कार्यक्रम को बी.एड. पाठ्यक्रम की समाप्ति पर कराना चाहिए।
2. इण्टर्नशिप में कार्यदिवसों की गणना पूरे राज्य/देश में समान होनी चाहिए।
3. इण्टर्नशिप में मूल्यांकन का तरीका एक समान होना चाहिए ।
4. राज्य के सभी विश्वविद्यालयों में बी.एड. पाठ्यक्रम में इण्टर्नशिप का मूल्यांकन एक समान होना चाहिए ।
5. इण्टर्नशिप में किये जाने वाले समस्त कार्यों की जानकारी राजकीय विद्यालय के संस्थाप्रधान/शिक्षकों को होनी चाहिए।
6. इण्टर्नशिप कार्य के पर्यवेक्षण के लिए कोई निश्चित एवं प्रभावकारी व्यवस्था होनी चाहिए।
7. छात्रों को इण्टर्नशिप के लिए निजी विद्यालयों में भेजना चाहिए ।
8. बी.एड. महाविद्यालय एवं राजकीय विद्यालयों में तालमेल होना चाहिए।

संदर्भ

1. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (विनियम मानदण्ड तथा क्रियाविधि) विनियम 2014
2. शिक्षा में स्नातक (बी.एड.) कार्यक्रम प्रयोगात्मक गतिविधियों के लिए हस्तपूस्तिका।
3. पन्नीरसेल्वम एस. के. (2009) अध्यापक शिक्षा, नई दिल्ली ए.पी. एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन।
4. स्कूल इण्टर्नशिप : फ्रेमवर्क एण्ड गाईडलाइन्स, (जनवरी 2016) राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली